<?xml version="1.0" ?>			
<?xml-stylesheet type="text/css" href="home.css"?>			
<Doc id="mai-w-media-	MT00001(c)	"	lang="Maithili ">
<Header type="text">			
<encodingDesc>			
<projectDesc>	CIIL-Maithili Corpora, Monolingual Written Text		</projectDesc>
<samplingDesc>	Simple written text only has been transcribed. Diagrams, pictures, tables and verses have been omitted. Samples taken from page 27-40		</samplingDesc>
</encodingDesc>			
<sourceDesc> <biblStruct> <source>			
	<category>	Aesthetics	</category>
	<subcategory>	Literature-Biographies	</subcategory>
	<text>	Book	</text>
	<title>	tArAshaMkara baMdhyOpAdhyAya	</title>
	<vol>		</vol>
	<issue>		</issue>
</source>			
<textDes>			
	<type>		</type>
	<headline>		</headline>
	<author>	tArAshaMkara baMdhyOpAdhyAya	</author>
	<translator>	nibhA siMha	</translator>
	<words>	4,283	</words>
</textDes>			
<imprint>			
	<pubPlace>	India-New Delhi	</pubPlace>
	<publisher>	sAhitya akAdaml	</publisher>
	<pubDate>	1996	</pubDate>
</imprint>			
<idno type="CIIL code">			</idno>
<index>		MT00001(c)	</index>
</biblStruct> </sourceDesc>			
<profileDesc> <creation>			
	<date>		</date>
	<inputter>	H.S.Rupa	</inputter>
	<proof>	Arun Kumar Singh	</proof>
</creation>			
<langUsage>		Maithili	</langUsage>
<wsdUsage>			

<writingSystem id="ISO/IEC 10646">Universal Multiple-Octet Coded Character Set (UCS).
</writingSystem>
</wsdUsage>
<textClass>
<channel mode="w"> print </channel>
<domain type="public"> </domain>
</textClass>
</profileDesc>
</Header>
<text><body>

 হুনক বেসী ভাগ মহত্ত্বপূর্ণ কথা সব মাটিসঁ এহি তরহেঁ জুড়ল অছি জে ওহি কথাক পাত্র সব ক্ষেত্রীয় নহি রহি জাइछ অবং পাঠক অনুভব করৈछ জে ক্ষেত্র আর বাতাবর্ণক কিংচিত পরিবর্তনক পশ্চাত্ ओ গ্রামীণ ভারতক কোনো ভাগক কথা ভ' সকৈछ। এক সাধারণ মনুষ্য মৃত্যু সঁ সংঘর্ষ করৈত আর অপন বর্তমান সময়কেঁ সার্থক করবাক প্রয়াসমে আদর্শরূপ বনি জাइछ। 'পৌষী লক্ষ্মী' (দেবী লক্ষ্মী, জিনক আরাধনা পৌষ মাসমে কৈল জাइछ)ক মুকুন্দ পাল বৈহ আদিরূপক মহত্তাকেঁ প্রাপ্ত করৈछ। ओ এক বৃদ্ধ কৃষক অছি আ অপন ক্ষেত্রমে সভসঁ নীক অছি। ई সন্ ১৯৪৪ ई. থিক বংগালক ভয়ংকর চক্রবাত আর অকালক বাদক সাল। এহি সাল খেত সভ ধানসঁ ভরল অছি জকরা শীঘ্রহি কাটব আবশ্যক অছি। দোসর বিশ্বযুদ্ধ চলি রহল অছি তেঁ খেতিহর মজদূর মুশ্কিলসঁ ভেটৈछ আর ওহি ক্ষেত্রক খেতিহর মজদূর সব বিভিন্ন যুদ্ধ-নির্মাণ কার্যমে নিযুক্ত ভ' গেল অছি। পাকল আর স্বর্ণিম ধান মুকুন্দক লেল লক্ষ্মী অছি, সম্পত্তিক প্রতীক। মাত্র পরাক্রমী লক্ষ্মীকেঁ প্রাপ্ত ক' সকৈछ। মুকুন্দকেঁ অপন শক্তি ক্ষীণতাক অনুভব হোइछ। অপন সময়ক প্রসিদ্ধ ফসল কটনিহার এহি যথার্থকেঁ স্বীকার নহি করৈछ জে ओ বৃদ্ধক সংগহি অশক্ত সেহো ভ' গেল অছি। ओ তাকত জুটৈবাক লেল মদিরা পান করৈত অছি আর পৈশাচিক শক্তিসঁ ফসল কাটি লৈত অছি। জখন ধানসঁ লদল গাড়ীকেঁ ओকর বড়দ নহি উঠা সকৈछ তখন মুকুন্দ গাড়ীক তরমে কান্হ লগা কয গাড়ী ঠেলবাক প্রয়াস করৈछ। ওহি ভারসঁ দবি কয়ओ মরি জাइত অছি—ধানক শীশকেঁ পকড় নে আর স্বর্ণিম খেতক অন্তিম দর্শন করৈত; ओ লক্ষ্মী কেঁ নহি জীতি সকল।

 "ইমারত" ক জনাব অলী, গ্রামক প্রমুখ রাজমিস্ত্রী, এখটা আর আদর্শ পাত্র অছি। জীবন—ভরি ओ শানদার মকান আর ভব্য মস্জিদ সভক নির্মাণ কৈলক এবং অপন দক্ষ—কার্যপর ওকরা অভিমান ছল। বৃদ্ধাবস্থামে ओ কংগাল ভ' জइछ আর একটা বটবৃক্ষক তরমে রহৈछ। জাহি ঠাম ओ বৈসল অছি আর মৃত্যুক প্রতীক্ষা ক' রহল অছি। আব ओ অপনাকেঁ পরমস্রষ্টা ঈশ্বরক বেসী নিকট অনুভব করৈछ। উজ্জর মেধ ওকর বনায়ল কোনো---গিরজাধরসঁ বেসী সুন্দর অছি। সঘন পাতবলা বৃক্ষক গোল গুম্বদ ঈশ্বরক বনায়ল, "ইমারত" ছৈক। জখন ओ ঈশ্বরক আগাঁ আত্ম-সমর্পণক' দৈত অছি, ওকর হৃদয়কেঁ শান্তি ভেটৈछ। এহি কথামে তারাশংকর ভাগ্যবাদী ভারতক স্পর্শ কৈনে ছথি। জে ব্যক্তি জীবন ভরি দোসরাক লেল ঘর বনবৈত রহল, ওকরা সমাজ শরণ নহি দৈত অছি, আর ওকরা শরণ ভেটৈछ একটা বৃক্ষক তরমে, জকর রচয়িতা ধর্মানুসার ঈশ্বর ছথি।

 হুনক গ্রামীণ-পাত্র সভ প্রশ্নকর্ত্তা অথবা বিদ্রোহী নহি অছি। অধিকাংশতঃ ओ সভ স্বীকৃত ব্যবস্থামে জীবৈত আর কাজ অছি মুদা ওকরা সভমে দুর্লভ মানবীয় গুণ অছি আ তেঁ ओ সভ মহান অছি। ई ओ লোক সভ অছি জকরা তারাশংকর জনৈত ছলাহ আর ओ তেঁ ওকরা সভক মহানতা দিস বারম্বার হমরা লোকনিক ধ্যান আকৃষ্ট করৈত ছথি। "ডাক হরকারা"

	कथाक नायक दीनू एकटा एहने पात्र अछि। ओ डाक विभागक एक ईमानदार कर्मचारीक रूपमे पन्द्रहटाका मास पर डाकक थैला रेलवे स्टेशन पहुँचबैत अछि। जखन ओकर बेटा निताई रुपैयावला डाकक थैला लुटबाक प्रयास करैछ, दीनू ओकरा चीन्ह लेत अछि और पुलिस कें कहि दैत अछि। एहि दुर्लभ ईमान्दारीपर ओखरा तीन सै टाकाक पुरस्कार देल जाइछ। ओकर बेटा भागि जाइछ। ओकर पत्नी और ग्रामवासी एहि निर्मम काजक लेल ओकर निन्दा करैछ। दीनू एकाकी रहि जाइछ। बहुत दिनक पश्चात् ओकरा ज्ञात होइछ जे निताई अपन पथ सुधारि लेने छल और एक उत्तम उद्देश्यक लेल अपन प्राण द' देलक। निताईकें पुरस्कारमे देल गेल स्वर्ण पदक दीनूकें देल जायत। आब दीनू अपन नौकरीसँ त्यागपत्र द' दैत अछि। अखन धरि ओ लोक सभकें संदेश पहुँचबैत छल आर आब ओकरा अपन संदेश भेटैछ। कोनो तरहें दीनूक अशक्त चेतनामे एकटा भाव जगैत अछि जे ओकर भाग्यक चक्र समाप्त भ' गेल अछि। एक गरीब और ईमान्दार व्यक्तिक विवेक और अपन पुत्र स्नेहक मध्य संघर्षमे अन्ततः पैतृक स्नेहपर विवेकक विजय दीनूक चरित्रकें महान बना दैत अछि। एतहि कथाकारक रूपमे ताराशंकरक महानता दृष्टिगोचर होइछ। ओ एक साधारण व्यक्तिकें लैत छथि और ओकर गहनतामे प्रवेशक' एवं ओकर समस्त सम्भावना सभक संधान क' ओहि पात्रकें एक सम्पूर्ण व्यक्तित्वक आयाम दैत छथि। जनाब अली, मुकुन्द पाल और दीनू ई सब एही श्रेणीमे अबैछ।	
	बंगला साहित्य कथाक दृष्टिसँ बड़ सम्पन्न अछि। कथाक क्षेत्रमे पर्याप्त प्रयोग कैल गेल अछि। ताराशंकरक कथा सभमे पारासन दुर्ग्राह्य विशेषताक कमी अछि जे प्रेमेन्द्र मित्र नाटकीयताक किंचित बलसँ प्राप्त कैलनि, अथवा माणिक बनर्जीक गम्भीर एवं तीक्षण जटिलता, अथवा अचिंत्यकुमार सेनगुप्ताक तीक्ष्ण कौशलमे अछि। अखन धरि ओ पैघ कथाकार बनल छथि। ई महानता ओ कोना प्राप्त कैलनि? हुनक उपलब्धि एहि यथार्थपर अवस्थित अछि जे जीवनक बहुविधि ऐश्वर्य हुनका एतेक मस्तक' दैत अछि जे ओ अपन लेखनसँ प्रत्यक्ष रूपें जुड़ि जाइत छथि। गम्भीर अवचेतनक जटिलता, मनोवैज्ञानिक विकृति, समाजक अव्यवस्थामे फँसल दुर्बल मनक वक्र प्रक्रियामे हुनका कोनो रुचि नहि छल। साधारण मनुष्यक प्रति हुनक चिर स्थायी रुचि बनल रहैछ। उपेक्षित शिल्पसँ ओ जे किछु प्राप्त नहि क' सकलाह ओकरा अतिनाटकीयता और मौलिक भावप्रवणताक ओकर शुद्ध रूपमे प्रस्तुत कए प्राप्त कैलनि। ओ सहजहि पाठकक हृदय मे प्रवेश कए गेलाह। हुनक कथा सभमे साधारण मनुष्य अपनाकें चीन्हि सकैछ।	
	"चैताली घुरनी", "पाषाणपुरी", "नीलकण्ठ", (शिवक नाम, समुद्रसँ प्राप्त विषक पान करबाक पश्चात् हुनक कण्ठ नील भ' गेल छलनि) और "मन्वन्तर" (अकाल) कें उथल—पुथलक उपन्यास कहल जा सकैछ। उथल-पुथल और संघर्षक प्रसंग आन उपन्यास सभमे सेहो उपलब्ध अछि मुदा एहि चारुक विशेष उल्लेख आवश्यक अछि।	
	"चेताली घुरनी" समृद्ध समाजक बीच फँसल साधारण मनुष्यक दुर्दशाक विषयमे अछि। पुस्तकक आरम्भ ग्रामक अकालक सजीव चित्रणसँ होइछ। चैत (पन्द्रह मार्चसँ चैदह अप्रील धरि) बंगाली सालक अन्तिम मास होइछ। एहि मासमे "काल बैशाखी" (आन्ही) सूखल पात कें उड़ा ल' जाइछ और बंगाली नव-वर्षक घोषणा करैछ। अकालक चलते लोक सभ भूखसँ मरि रहल अछि। सियार और बंगाली नव-वर्षक घोषणा करैछ। अकालक चलते लोक सभ भूखसँ मरि रहल अछि। सियार और गीध मुर्दाक हड्डी नोचि रहल अछि। मदतिक लेल क्यो	

	नहि अबैछ तथापि लोक भगवानसँ दयाक विनती करैछ। सम्पूर्ण ग्राम श्मशान-भूमि बनि जाइत अछि। एकटा निर्धन कृषक गोष्ठा अपन पुत्रक मृत्युक पश्चात् अपन स्त्री दामिनीक संग गाम छोड़ि दैत अछि कियैक तँ ओ ने तँ जमींदारक कर्ज चुका सकैत अछि आ ने अफगानी सूदखोरक। ओ एक शहर जाइछ और एकटा छोट सन कारखानामे काज आरम्भ करैछ। एतहु ओ देखैत अछि जे लोक निष्ठुर और गरीबक प्रति निर्मम अछि। एक व्यक्तिकेँ पचास सँ साठि पाइक लेल दिनमे आठ घंटा काज करै पड़ैत अछि। गन्दगीसँ भड़ल जाहि बस्ती मे ओ रहैत अछि, ओ "समाजक कूड़ादान थिक, धनी वर्गक कूड़ा-पेटी"। सामर्थ्यवानक लेल स्त्रीक सम्मान कोनो अर्थ नहि रखैछ। छोटू मिस्त्री दामिनीक लोभक पाछाँ पड़ल अछि। जखन राजनैतिक कार्यकर्त्ता मजदूर सभकेँ बिना पर्याप्त वेतनक अतिरिक्त काज (ओवर टाइम) करैसँ मना करैत अछि तखन हड़ताल भ' जाइछ और कारखाना बन्द भ' जाइछ। भूखमरीक क्रम आरम्भ भ' जाइछ। मजदूर कारखानाक मालिक लग जा कए पुनः काजक लेल प्रार्थना करैछ। हड़ताल समर्थक ओकरा सभसँ लड़ैत अछि। हाथापाईमे छोटू मिस्त्री क्रोधोन्मादमे गोष्ठाक हत्या कए दैत अछि। उपन्यास राजनैतिक कार्यकर्त्ताक एक शब्द सँ समाप्त होइछ, "चैतक आन्ही किछु नहि अछि। ई प्रचण्ड आन्हीक पूर्व घोषणा अछि।"	
	एहि सजीव और हृदयस्पर्शी लघु उपन्यासक रचनाक आरम्भ कारावास मे भेल छल और सुभाषचन्द्रकेँ समर्पित छल। एहिमे नवीनता अछि। ताराशंकरक विशेष कमीक उपरान्तो ई ओहि समयक प्रलेखनक दृष्टिसँ सफल अछि, जकर आरम्भ ताराशंकरक समयसँ पहिनहि भेल छल और हमरा सभक धरि चलैत रहल। आइयो धरि एहि पुस्तकक किछुओ अप्रासंगिक नहि भेल अछि। अखनहुँ हमरा सभक चारु दिस गरीब कृषक सभ महाजन और घनी भूस्वामी सभक हाथे अपन जमीन गमा रहल अछि। ओकरा सभकेँ प्रत्येक वर्ष जबरदस्ती अपन वासभूमि छोड़ि काजक खोजमे औद्योगिक क्षेत्रमे बसे पड़ैत छैक। घोर अन्याय अक्षुण्ण रूपसँ भ'रहल अछि और ने तँ गरीब कृषक सभकेँ आ ने अप्रशिक्षित मजदूर सभकेँ कानून सँ कोनो संरक्षण भेटैछ। दस्तावेजी स्वरूपक कारणेँ ई पुस्तक बहुमूल्य अछि। एकर संरचना परवर्ती उपन्यास सभसँ बेसी गठल अछि और परवर्ती लेखनमे प्राप्त पुनरावृत्ति और अतिरंजना एहिमे कम अछि।	
	"पाषाणपुरी" स्थूल, संरचनाक दृष्टिसँ कमजोर और असंगत अछि। अपन बन्दीगृहक अनुभवक उपरान्तो ताराशंकर जेल जीवनक कमजोर पक्षपर कम बल्कि दण्डित कैदी काली कर्मकारपर बेसी लिखलनि जकरा हत्या और अगिलग्गीक लेल फाँसी देल जाइत। लेखनक प्रथम चरणहिसँ हुनका नाटकीयता और विकृति आकृष्ट कैने छल। जेल-जीवनक विषयमे ओ लिखलनि, "कानूनक अनुसारेँ शासक अपराधीक अपराध मूल प्रवृत्तिकेँ जंजीरसँ बान्हि और पाथरक देवालमे बन्दी बना क' समाप्त करबाक प्रयास करैछ-व्यक्तिमे निहित अपराधी नहि मरैछ–भयभीत साँप जकाँ ओ मानव-मनक गहनतामे नुका जाइछ–बीलमे नुकैल आहत साँप जकाँ ओ क्रोधमे फुफकारैत अछि। आइयो मनुष्य विषकेँ अमृतमे परिवर्तित करब नहि सिखलक।–तेँ एक दण्डित चोर जेलक सजाय काटबाक पश्चात् कठोर अपराधी बनि जाइत अछि।" साँप, अमृत, विष—ताराशंकरक प्रिय शब्द-बिम्ब एहि ठाम अछि। राजनैतिक कैदीक वर्णन करैत प्रसंगतः ओ सोझे काली कर्मकारकक जीवन-गाथाक वर्णन करै लगेत छथि जे कामवासनामे हत्या कैने छल और जकरा ताराशंकर जिला-अदालतमे देखने छलाह।	
	"नीलकण्ठ", "पाषाणपुरी" सँ बेसी स्थूल और उपकथात्मक अछि। ई एक गरीब कृषक श्रीमंत	

	और ओकर पत्नी गिरीक विषयमे लिखल गेल एकटा लघु उपन्यास अछि, जकर जीवन श्रीमंतक हरिलालक योजनासँ नष्ट भ' जाइछ। हरिलाल अपन बेटी गौरीक लेल एहि निःसन्तान दम्पतिक प्रेमक अनुचित लाभ उठबैत अछि और श्रीमंतकेँ अपन एकमात्र खेत बेचबाक लेल बाध्य करैत अछि जाहिसँ गौरीक विवाह एक नीक लड़कासँ भ' सकै। हरिलाल एक अयोग्य व्यक्तिसँ अपन बेटीक विवाह क' दैत अछि। श्रीमंत हरिलालपर प्रहार करैत अछि जाहिसँ ओ बन्दी भ' जाइछ। गिरी एकाकी रहि जाइछ और ओ गर्भवती अछि। जखन ग्रामीणकेँ श्रीमंतक प्रति ओकर एकनिष्ठतापर संदेह होइछ, गिरी गाममे आगि लगा क' भागि जाइछ। ओ शहरक अस्पतालमे एक पुत्रकेँ जन्म दैत अछि। एकर नाम नीलकण्ठ राखल जाइछ। गिरी आत्महत्या क' लैत अछि। नीलकण्ठ पैघ भ' जाइछ और प्रायः अपन पैतृक ग्राममे फल–संग्रह करबाक लेल अबैत अछि, जकरा ओ शहरमे बेचैत अछि। ओ गामसँ जुड़ल अपन सम्बन्धसँ अनभिज्ञ अछि। जेलक अपन सजायकाटि श्रीमंत गाम अबैछ। ओकरा ई लड़का भेटैत अछि और बिना जान—पहचानक ओ एकरा संग गाम छोड़ि चलि जाइत अछि। उपन्यास कमजोर और कल्पना प्रधान अछि। एकर कोनो पात्र विश्वासोत्पादक नहि अछि। ओ एकर वर्णन नहि करैत छथि जे नीलकण्ठ सन अनाथ बालक कोना पैघ भेल। एकर नामकरण सेहो मिथ्या अछि कियेक तँ कथाक घटना सभक प्रतिपादनमे नीलकण्ठक भूमिका बड़ कम अछि।	
	अपन यथार्थता और दस्तावेजी गुणक चलते "मन्वन्तर" अखनहुँ मूल्यवान अछि। एहि पुस्तकक प्रकाशन सन् १९४४ ई. मे भेल छल। जापानी हवाई आक्रमणक चलते कलकत्तामे पसरल आतंक, कलकत्तामे अकाल—पीड़ित सभक बाढ़ि, आवश्यक उपयोगी वस्तु और खाद्यक अभावक कारणेँ गरीब और निम्न मध्यवर्गक अकथनीय दुर्दशा, महात्मा गाँधीक 21 दिनक उपासपर राष्ट्रव्यापी चिन्ता, एहि तरहक अनेको तत्कालीन घटना सभकेँ एहिमे लिपिबद्ध कैल गेल अछि।	
	उपन्यासक नायक कनाई भूतपूर्व धनी सुखमय चक्रवर्तीक वंशज अछि। आब चक्रवर्तीक घर तबाहीमे अछि। घरक सदस्य सब पूर्ण बदनामी भोगि रहल अछि। कनाईकेँ नीलासँ प्रेम अछि, मुदा ओ ओकरासँ विवाह करै सँ डेराइत अछि, कियेक तँ ओकरा ई लगैत अछि जे ओकर रक्त दूषित अछि और विवाहक पश्चात् ओ घरक आन सदस्य सभ जकाँ रोगग्रस्त भ' जायत। सामंती चक्रवर्ती परिवार एहि लेल निराकृत अछि, यथार्थ केँ अस्वीकार करैत अछि और समयक संग आगाँ बढ़ब छोड़ि देने अछि। परिवारक एक युवा सदस्य घरमे नग्न रहैत अछि। ओकर माता-पिता ओकरा पवित्र मानैत अछि। स्त्रगण चोरी करैत अछि, आदमी भ्रष्ट अछि। घरमे मात्र कनाईक माय अपवाद अछि।	
	अकाल पीड़ित और मिदनापुरक बाढ़िक लेल कनाई, नीला और नीला क भाय नेपी राहत कार्य करैत अछि। पश्चिम बंगालक दक्षिणी–पश्चिमी जिला मिदनापुर दुतरपा आघात भोगि रहल अछि। सन् १९४२ ई.क पश्चात् दू वर्षसँ ओहि ठाम पुलिस–अत्याचार भ' रहल छल। चक्रवात फलिसकेँ बर्बाद क' देने छल। कनाईक घरक वातावरण उबाऊ अछि। नीलाक संग काज करैत ओकरा किछु राहतक अनुभव होइछ।	
	युद्ध विभिन्न परिवारकेँ विभिन्न तरहेँ अपंग और प्रभावित कैलक। कनाईक पड़ोसीक बेटी गीताकेँ स्वयं ओकर पिता दलाली करैवाली स्त्री लग पठा दैत अछि, कियेक तँ युद्ध लोक सभकेँ सम्पन्न बना देने अछि और अविवाहित कन्या सभक बड़ माँग अछि। गीताकेँ एक	

	धनी आदमीक हाथेँ बेचि देल जाइत अछि और तत्पश्चात् ओ ओकर बलात्कार करैत अछि। ओ सुरक्षाक लेल रास्तापर निकलि अबैत अछि। कनाईकेँ ओ सड़कपर भेटैछ एवं ओ ओखरा विजय दा–एक पत्रकार और कम्युनिस्टक लग ल' जाइत अछि। युद्ध एक नव पीढ़ीकेँ जन्म दैत अछि और माता-पिताक मध्य विराग उत्पन्न भ' गेल अछि। कनाई घर त्यागि दैत अछि जखन ओकरा ज्ञात होइछ जे ओकर पिता मेहनतक कमाइ शराबमे उड़ा दैत अछि। नीलाक पिताकेँ अपन पराजयक अनुभव होइत अछि, कियेक तँ नीला अपन परिवारक प्रमुख जीविका—अर्जित कयनिहार अछि और बेटीसँ पाइ लेब हुनक सिद्धांतक विरुद्ध अछि। नीला सेहो घर त्यागि दैत अछि। हालहि वैध संगठन घोषित कम्युनिस्ट पार्टीमे नेपी सम्मिलित भ' जाइत अछि। परिवार बिखरि जाइत अछि। कलकत्तापर बमबारी होइत अछि। चक्रवर्तीक पुरान घर नष्ट भ' जाइछ और अनेक सदस्यक मृत्यु भ' जाइछ। गीताक पिता घर छोड़ि दैत अछि और ओकर माय रस्तापर भीख माँगय लगैत अछि। कनाई अपन रक्तक जाँच करबैत अछि। ओकर रक्त विकार रहित छल। ओ और नीला विवाह क' लेत अछि। पत्रकार वियज दा अपन पत्रक लेल एकटा लेख लिखैत अछि जाहिमे ओ युद्धक समर्थन करैत अछि। ई युद्ध सब युद्धकेँ समाप्त क' देत और गाँधीजीक आदर्श भारतकेँ एक गोरवमय भविष्य देत। भावी समाज समानतापर आधारित हैत।	
	ताराशंकर अत्यन्त सामयिक विषय चुनलनि जे हुनक लेखकीय विवेकक प्रतिबद्धताक प्रमाण थिक। आलोचक लोकनिक कहब छन्हि जे ताराशंकर पत्रकारिताक लेल साहित्यक बलि चढ़ा देलनि। मुदा, आजुक पाठकक लेल, ई पुस्तक अति गम्भीर रुचिक अछि। सरोजकुमार रायचौधरीक "कालोघोड़ा" (कारी घोड़ा)क अतिरिक्त आन कोनहुँ बंगला उपन्यासमे, युद्धक विभीषिकाक एतेक निष्ठासँ चित्रण नहि भेल अछि, यद्यपि प्रख्यात कथाकार लोकनि युद्धपर किछु स्मरणीय कथा सभ लिखने छथि। मुदा कथे सभ किये? ई विषय कि एतेक प्रेरक नहि छल जे लेखक बंगालक तत्कालीन यंत्रणाक अनुभव करितथि? मात्र ताराशंकर एकरा एक अत्यावश्यक और तात्कालीक विषय मानलनि और मात्र उपन्यासे ओहि विभिन्न समस्या सभकेँ समेटि सकैत छल। ताराशंकर एकमात्र लेखक छथि जे यद्यपि कम्यूनिस्ट नहि छलाह, तथापि ई अनुभव करैत छलाह जे क्मयुनिस्ट पार्टीकेँ नष्ट नहि कैल जा सकैछ कियेक तँ शिक्षित युवावर्ग और पुरान राजनैतिक कार्यकर्त्तापर ओकर बड़ बेसी प्रभाव अछि। निन्दा करबाक लेल बहुत किछु छल मुदा ओहि क्षण अकाल—राहतक लेल कम्युनिस्ट एहि तरहेँ संगठित भए कार्य क' रहल छल जे प्रत्येक दिशासँ ओकरा प्रशंसा भेटल। एकर अतिरिक्त, प्रगतिवादी लेखक एवं कलाकार लोकनि पार्टीक प्रभावमे आबि रहल छल। ताराशंकर यथार्थतः अपन उपन्यासमे एहि यथार्थक समावेश कैलनि। उपन्यासक दृष्टिसँ "मन्वन्तर" सुगठित नहि अछि। पुस्तकक सबसँ उल्लेख्य कथांश चक्रवर्ती-परिवारक विषयमे अछि। नीला एखटा कम्युनिस्ट अति विश्वसनीय रूप चित्र नहि अछि। विजय दा समर्पित, शान्त अछि और ताराशंकर द्वारा सृजित चरित्रक स्मरण करबैत अछि। एहि पुस्तकमे ओ पुरान साहित्यिक शैलीक वर्णनात्मक प्रयोगक स्थानपर संवादात्मक शैली दिस प्रस्थान करैत छथि।	
	जेना कि पहिनहि कहल गेल अछि, ई पुस्तक अपन सामाजिक प्रलेखनक कारणेँ आजुक पाठकक लेल रुचिकर हैत। ई स्मरण राखब आवश्यक अछि जे अकालमे दस लाख लोकक जान गेल और कारी धनसँ भरल—पूरल कलकत्ताक सड़कपर हजारो लोक मरि गेल, मुदा ने	

	तँ कोनो सिनेमागर बन्द भेल आ ने मद्यशालाक उच्छृंखल आमोद—प्रमोद रूकल। परिवारकेँ जीवित रखबाक लेल किशोरी वेश्यावृत्तिक लेल बाध्य भ' रहल छल। मिदनापुरक चक्रवातमे हजारो जान गेल। पुस्तकमे उद्धृत एक सरकारी रिपोर्टक अनुसार दूटा गामक दू सै छियासी लोक सभमे सँ मात्र पाँच टा जीवित बाँचल छल।	
	"धातृदेवता" १९३९ ई. मे प्रकाशित भेल छल। ताराशंकर तुनुकमिजाज लेखक छलाह और हुनका अपन पुस्तककेँ पुनः लिखबाक, परिवर्तन करबाक अभ्यास छलनि मुदा ओ "धातृदेवता" केँ ने तँ दोहरा क' लिखलनि वा ने कोनो परिवर्तन कैलनि। ई पुस्तक अर्धआत्मकथात्मक अछि और एहिमे उपन्यासक रूपमे ताराशंकरक परिचित विशिष्टता बीज रूपमे विद्यमान अछि। छोट जमींदार सभक समस्या, व्यापारी वर्गक उदय, भूमि सम्बन्धी समस्या, साधारण लोक सभक संघर्ष, प्रभावशाली व्यक्तित्वक स्त्री एवं पुरुष, दयालू जमींदार, संन्यासी, विरोधी विचार वला राजनैतिक कार्यकर्त्ता, अनावृष्टि, हैजा, अकाल-सभ किछु एहि उपन्यासमे अछि। उपन्यासक संरचना साफ—सुथरा और मिश्रित अछि। ई हुनक महाकाव्यात्मक उपन्यास लिखबाक प्रथम प्रयास अछि। एक महाकाव्यक उपन्यास देश और कालकेँ अपन सम्पूर्णतामे प्रतिबिम्बित करैत अछि। एकरा लेल विषयगत निष्ठा और तटस्थता आवश्यक अछि। परवर्ती तीनू महाकाव्यात्मक उपन्यास, "गणदेवता", "पंचग्राम",और "हाँसुली बाँकेर उपकथा" जे ताराशंकर लिखलनि, "धातृदेवता" ओहि सभक उपक्रम मात्र छल। ई सभ उपन्यास महाकाव्यात्मक अछि। यद्यपि ओ अपन समयक गप्प कहैत छथि, तथापि ओ देश और जनता, भूत और वर्तमानक एतेक पैघ चित्र प्रस्तुत करैत छथि जे ई उपन्यास समसामयिक सीमा नाँधि सम्पूर्ण देश और समग्र जनताक प्रतिनिधि भ' जाइछ।	
	शिवनाथ "धातृदेवता"क नायक अछि। ओ एकटा छोट जमींदारक एकमात्र पुत्र अछि और ओकर पिताक मृत्यु ओकर बाल्यकालहिमे भ' गेल छल। दूटा असाधारण महिला, एकर माय आ काकी एकर पालन—पोषण करैत छथि। एकर माय स्नेहमयी, सहनशील, शान्त और अनुशासन प्रिय अछि। एकर काकी स्नेहमयी, घमंडी, दबंग और अधीर अछि। शिवनाथक लेल ओकरा स्वत्वात्मक वात्सल्य अछि। ओकरे आग्रह पर शिवनाथक विवाह स्कूलक पढ़ाइ समाप्त करैसँ पहिनहि एक सम्पन्न व्यक्तिक भतीजी गौरीसँ होइत अछि। गाममे हैजाक महामारीसँ संघर्ष करैत ओकर भेँट सुशील पूर्ण नामक दूटा राजनैतिक कार्यकर्त्तासँ होइत अछि जे भविष्यक सामग्रीक रूपमे आतंकवादी विचार सभ दिस ओकर मनकेँ परिवर्तित करबाक विचार बना लैत अछि। गौरीक प्रति ओकर प्रेम ओकर काकीकेँ बर्दाश्त नहि होइछ और अंततः गौरीक पित्ती ओकरा कलकत्ता ल' जाइछ जतय ओ एकटा पुत्रकेँ जन्म दैत अछि। शिवनाथ कॉलेजमे पढ़बाक लेल कलकत्ता अबैत अछि जाहिठाम सुशील और पूर्ण ओकरा अपन काज दिस आकर्षित करैत अछि। शिवनाथकेँ ओहि समय गम्भीर आघात पहुँचल जखन पूर्ण पार्टीक आदेशपर एक पुरान आतंकवादीक हत्या क' दैत अछि जे गाँधीजीक अहिंसक विचार सभक समर्थक भ' गेल छल और अपन हथियार नष्ट क' देने छल। एहि बीच शिवानथक मायक मृत्यु भ' जाइछ और काकी बनारस चलि जाइछ जाहि सँ कि शिवनाथ और गौरीक एक दोसरासँ मेल-मिलाप भ' सकय। शिवनाथ अपन जमींदारीक एकटा दूरस्थ गाममे जाइत अछि जतय ओ गरीब ग्रामीण सभक कल्याणक लेल काज करैत अछि। असहयोग आन्दोलनक क्रममे शिवनाथ अपन गिरफ्तारी दैत अछि। गौरी और ओकर	

	काकी, जकरामे मेल भ' गेल छल, ओकरासँ भेँट करै जाइत अछि। शिवनाथ दुनू केँ एक संग देखि प्रसन्न होइत अछि और काकीसँ कहैत अछि जे ओकर पुत्र केँ ओहने स्नेह देथि जे कहियो शिवनाथकेँ देने छलीह।	
	उपन्यासमे ताराशंकर अपन पीसीक मृत्युकेँ "हमर धातृदेवताक मृत्यु" कहैत छथि। एहि पुस्तकमे शिवनाथक काकी एकमात्र प्रेरणास्रोत नहि अछि। ओकर माताक भूमिका बेसी महत्त्वपर्ण अछि। ओ ओकरा देश और लोक सभसँ प्रेम करबाक शिक्षा देलनि। शिवनाथक चरित्रक विकास सुसंगत ढंगसँ होइछ। विभिन्न प्रभाव वला विभिन्न व्यक्ति सभक सम्पर्कमे आबि ओकर चरित्रक विकास होइत अछि। ओकर माता और काकी, गोसाई बाबा, एक संन्यासी, सुशील, वृद्ध क्रांतिकारी ई सभ ओकर चरित्रक निर्माणमे सहायक होइत अछि। गौरी ओकरा प्रभावित करबामे असफल रहलीह, कारण, ओ एहन पृष्ठभूमिसँ आयल छलीह जाहिठाम एकमात्र पाइयेसँ प्रतिष्ठा भेटैछ। आगाँ चलि गौरीक असंदिग्ध प्रेमक रूपान्तरणक चित्रण बहुत दृढ़ताक संग नहि भेल अछि। भारतमे आतंकवादी सभक विफलताक पश्चात् भगोड़ा और फरारी सुशील केँ शिवनाथक मदतिसँ ई स्पष्ट होइछ जे ताराशंकरकेँ भारतक आतंकवादी सभक विषयमे कतेक जानकारी छलनि। ओ ओकरा सभक विचार कखनो नहि मानलनि, मुदा देशक लेल जान देनिहार आत्मसमर्पित नवयुवक सभक लेल हुनक हार्दिक सहानुभूति रहल और जखन ओकरा सभक हिंसक उपाय विफल भ' गेल तखन क्रांतिकारी सभ रूस, जर्मनी, अमेरिका और आन यूरोपीय देश सभमे भारतक स्वतन्त्रताक लेल काज करबाक केन्द्र बनैबाक लेल फरार भ' गेल। शिवनाथ सुशीलसँ कहैत अछि, "तैंतीस करोड़ लोकक स्वतन्त्रताक लेल छियासठ करोड़ हाथकेँ उठायब हमर स्वप्न अछि। एक जनक्रांति।" सुशील शिवनाथक उपाय सँ सहमत नहि होइछ तथापि ओकरा मनमे शिवनाथक लेल सम्मान अछि। उपन्यासक गठन बड़ नीक अछि, गौरीक अतिरिक्त आन सब चरित्रक विकास तर्क संगत अछि। कथानकक निर्माणक क्रममे अकस्मात् कोनो प्रकारक आश्चर्य नहि अछि। अकाल और महामारीक चित्रण सजीव और विवश क' देबयवला अछि। भाषा सरल और समृद्ध अछि।	
	"गणदेवता" और "पंचग्राम" मिलि क' पाँचटा गामक कथा पूरा करैत अछि-महाग्राम, देखुरिया, शिवकालीपुर, कुसुमपुर और कंकना। ई दुनू पुस्तक गामक ओहि पंचायत-व्यवस्थाक सजीव चित्रण करैत अछि जे प्राचीन कालसँ एहि उपन्यासक युग धरि चलैत आबि रहल छल और आब शनैः–शनैः टूटि रहल छल। एहि उपन्यासक विषय पुरान सँ नव व्यवस्थामे परिवर्तन अछि और ई ग्राम–जीवनक एकटा पैघ परिदृश्यक प्रतिपादन करैत अछि।	
	पुरातन और मध्यकालमे बंगालमे गाम नौ, पाँच, तीन अथवा सातक समूहमे आवद्ध होइत छल और प्रत्येक समूह जनताक सहमतिसँ बनायल गेल ग्राम-प्रशासन समाजक माध्यमे चलाओल जइत छल। नवग्राम, पंचग्राम, सप्तग्राम–एहि प्रकारम नाम एकरे सँ उद्भूत भेल अछि। वास्तव मे ई ग्राम–समाज, ग्राम–प्रशासन एतेक नीक जकाँ चलैत छल जे सुदूरवर्ती राजधानी सभक शासक लोकनिकेँ विशेष चिन्ता नहि करय पड़ैत छलनि। ग्राम समाजक आदेश सभक पालन कठोर रूपेँ कैल जाइत छल।	
	"गणदेवता" क आरम्भ ग्राम समाजक अकुताहटि और चिढ़सँ होइत अछि कारण जे गामक लोहार अनिरुद्ध ग्रामीण सभक लेल काज करै सँ मना क' दैत अछि किये क तँ आब ग्रामीण	

	ओकर आवश्यकता भरि पर्याप्त धान ओकरा नहि द' सकैत अछि और पुरान प्रथाक अनुसार लोहार, नौआ, कमार और मोची, सभकेँ ग्रामीण सभक सेवाक बदला मे धान देल जाइत अछि। अनिरुद्ध कतहु आन ठाम जा क' काज करै और कमाय चाहैत अछि। ग्राम समाजसँ दण्डित होयबाक उपरान्त अनिरुद्ध ओहि संस्थाक आदेश सभक पालन करै सँ मना क' दैत अछि जे मात्र गरीब सभकेँ दबबैत अछि और गामक सबसँ धनी व्यक्ति श्रीहरिपाल जखन समाजक अवज्ञा करैत अछि तँ ओकर विरोधमे बजबाक साहस नहि करैत अछि। श्रीहरि हठी, कामुक और तानाशाह अछि। ओ अनिरुद्धक निःसन्तान पत्नी पद्माक पाछाँ लालायित छल। ओकर रखैल दुर्गा बावरी जातिक अछि। बावरी सभ गरीब और मेहनती होइत अछि। ओकरा सभक स्त्री उच्चवर्गक ग्रामीण सभक यौन आवश्यकताक पूर्त्तिक व्यवस्था करैत अछि। ई एक पूर्णारूपेण स्वीकृत व्यवस्था अछि। दुर्गाक मनमे गामक प्राथमिक शिक्षक देबू घोषक लेल अटूट निष्ठा अछि। सभसँ ओकरा प्रेम और आदर भेटैत अछि। गरीब कृषकक जमीन हड़पि क' श्रीहरि जमींदार बनबाक और उच्च वर्गमे स्थान पैबाक उद्देश्य रखैत अछि। ओ देबूसँ जे कि एक प्रकारेँ लोकनायक अछि, डेराइत अछि। जखन ओ देबूकेँ एकटा फूसि दोषारोपनमे गिरफ्तार करा दैत अछि तखन ग्रामीणसँ आरो दूर भ' जाइत अछि कियेक तँ ओ सब देबूसँ स्नेह करैत अछि। ओ पुनः देबूकेँ गठित दोषारोपमे फँसबे चाहैत अछि मुदा अनिरुद्ध ओ दोष अपना ऊपर ल'लैत अछि आ गिरफ्तार भ' जाइत अछि। श्रीहरिक पद्मापर अधिकार करबाक प्रयास देबूक माध्यमसँ विफल क' देल जाइत अछि कियेक तँ ओ एक नजरबन्द कैदी जतीनक धरमे पद्माक रहबाक व्यवस्था क' दैत अछि। हैजाक महामारीमे देबू कठोर परिश्रम करैत अछि मुदा ओकर पत्नी और पुत्र मरि जाइत अछि। ओ शोकातुर अछि। ग्राम समाज ओकर आँखिक समक्ष विघटित भ' जाइत अछि। श्रीहरि कृषक सभकेँ कीनि क' जमींदार बनि जाइत अछि। देबूक मित्र और सहायक जतीनकेँ पुलिस ल' जाइत अछि।	
	"पंचग्राम"क प्रारम्भ जमींदार सभक कृषक सभसँ बेसी मालगुजारी पैबाक विषयपर एकजुट होयबासँ होइत अछि कियैक तँ राजस्व—समझौताक अनुसारेँ खेतीक उपजाक मूल्य पछिला एक सौ सालमे बढ़ि गेल अछि मुदा कृषक अखनहु वैह पुरान दर द' रहल अछि। कृषक संगठित भ' गेल अछि कियेक तँ यदि खेतीक उपजा बेसी मूल्य अनैत अछि तँ तँ निर्वाह व्यय सेहो बढ़ि गेल और जाहि तरहेँ होय जमींदार सरकारकेँ पुरनके दर द' रहल अछि। ओ सभ महाग्रामक शिवशेखरक घर पर मिलैत अछि। देबू ओकरा सभकेँ कर भुगतान करबाक लेल कहैत अछि कियेक तँ कानून जमींदार सभक पक्ष लेत। शिवशेखरक पौत्र कृषक सभसँ संगठित रहबाक लेल कहैत अछि जाहिसँ सरकारपर कानून बदलबाक लेल दवाब देल जा सकै। ओकर विचार शिवशेखर आर देबूकेँ भयभीत क' दैत अछि। ओ ब्राह्मण सभक वर्चस्वकेँ अस्वीकार करैत अछि और रूढ़ि सभक अवज्ञा करैत अछि, जे कि शिवशेखरक लेल अक्षम्य पाप थिक, शिवशेखरक अपन पुत्र, विश्वनाथक पितासँ अंगरेजी सिखबाक प्रश्नपर एहन मतभेद छल जे ओ आत्महत्या क' लेने छल।	
	मुस्लिम बहुल गाम कुसुमपुरमे चमड़ाक व्यापारी दौलत शेख सभसँ प्रभावशाली व्यक्ति अछि। ओ देबूकेँ जमींदारक विरुद्ध ठाढ़ होयबसँ मना करैत अछि कियेक तँ मुस्लिम लीगक लोक और मंत्रीगण जमींदार सभक पक्षमे अछि। गामक स्कूल—शिक्षक इरशाद कहैछ जे मुस्लिम कृषक अलग आन्दोलन प्रारम्भ नहि करत बल्कि ओ हिन्दू कृषक सभक समर्थन करत। देबूकेँ डर छैकजे ओकरा एहि आन्दोलनक भार लेबय पड़त जकरा लेल अपन घरमे	

	सद्य: घटित शोकक बाद ओ प्रस्तुत नहि भ' सकल अछि। देबू कृषक सभकेँ अपन तरहथ जकाँ जनैत अछि। मई मासमेँ ओ सभ उधारक अन्नपर जीबैत अछि। ओकरा डर अछि जे ओ सभ जमींदार लोकनिक विरोध नम्हर समय धरि नहि क' सकत।	
	श्रीहरि आब जमींदार श्रीहरि घोष अछि। आन्दोलन आरम्भ होयबा सँ पहिनहि ओ ओकरा कुचलि देबय चाहैत अछि। ओ देबू और "भल्ला बागड़ी" नामक जनजातिक एक निडर और शूरवीर व्यक्ति टिंकारीक विरुद्ध डकैतीक मोकदमा दायर क' दैत अछि। शहरक मिल-मालिक लोकनिक प्रतिनिधि मुखर्जी बाबू श्रीहरिकेँ सलाह दैत अछि जे ओ अभावक समयमे कृषक सभकेँ अन्न उधार नहि द' क' भूखल मरै देथि। हिन्दू और मुसलमान कृषक एक संग कष्ट पबैत अछि। दौलत शेख देबूक विरुद्ध साम्प्रदायिक उन्माद भड़काबै चाहैत अछि। मुखर्जी बाबू, इरशाद और एकटा लड़ाकू कृषक रहम शेखकेँ गामसँ निष्कासित करबाक प्रयत्न करैत अछि। कुसुमपुरमे दौलत शेख और अपन गाममे श्रीहरि उपकार कैनिहारक ढ़ोंग करैत अछि और कृषक सभकेँ धान उधार दैत अछि। इरशाद और देबू ओहि दिनक पहिनहिसँ अनुमान क' लैत अछि जखन कि ई दुनू मिलि क' कृषक सभकेँ जमीनसँ बेदखल क' देत। जखन बाढ़ि अबैत अछि श्रीहरि कृषक सभक मदत्ति क' ओकरा सभक हृदयकेँ वशमे करबाक अवसरक लाभ उठबैत अछि।	
	पाँचोगामक लोक जे ग्राम—समाजक स्तम्भ छल एक-एक क' टूटि जाइत अछि। शिवशेखर गाम छोड़ि दैत अछि कियेक तँ विश्वनाथ ओकर खिलाफ भ' गेल अछि। टिंकारी गिरफ्तार भ' जाइत अछि। ओकर विधवा पुत्री स्वर्णा उच्च शिक्षाक लेल शहर चलि जाइत अछि। अनिरुद्धक पत्नी पद्मा नव जीवन आरम्भ करबाक लेल गाम छोड़ि दैत अछि। अनिरुद्ध ग्रामीण सभकेँ मात्र औद्योगिक क्षेत्रमे चलि जयबाक प्रलोभन देबाक लेल आपस अबैत अछि। देबू काँग्रेसमे मिलि जाइत अछि और १९३० ई. मे गिरफतारी दैत अछि। १९३३ ई. मे. ओकरा छोड़ि देल जाइत अछि। अन्तमे पाँचो ग्राम वर्तमान समयक कटु यथार्थसँ सचेत भ' जाइत अछि। जमींदार सभ चारुदिसक कृषि योग्य जमीन हड़पि लेलक अछि। ओ सभ कृषक सभकेँ बेदखल क' संथाल मजदूर सभकेँ मँगा लेने अछि। इरशाद कृषक संगठनक लेल काज करैत अछि और कानूनक परीक्षाक तैयारी करैत अछि। ओकील बनि क' ओ जमींदार सभसँ लड़बाक उद्देश्य रखैत अछि। धनी बेसी धनी और गरीब बेसी गरीब भ' रहल अछि। देबू अनुभव करैत अछि जे ओ आब बाहरी व्यक्ति बनि क' नहि रहि सकत। अन्ततः ओ सेहो कृषकेक वंशसँ आयल अछि। कृषक वृक्ष जकाँ अछि। ओ अपन जड़ि जमा क' पुनः जीवनक आरम्भ करय चाहैत अछि। देबू आब आरो बेसी यथार्थक अपेक्षाकेँ अस्वीकार नहि करत। एक साधारण व्यक्ति बनि क', दैनिक जीवनक आवश्यकता सभक पूर्ति क'– मात्र एहि तरहेँ देबू पाँचो गामक लेल ओ सभ काज क' सकैत अछि जे ओकरा करबाक अछि।	
	वास्तवमे ई दुनू पुस्तक एक उपन्यासक दू टा भाग थिक। अपन साहित्यिक संस्मरणमे ताराशंकर उल्लेख कैलनि अछि जे ब्राह्मण सभक लेल हुनक मनमे असीम आदर अछि और हुनका अनुसारेँ शिवशेखर एक आदर्श ब्राह्मण अछि। एहि दुनू महाकाव्यात्मक उपन्यासक बीज संस्कृत शिक्षित शिवशेखर और ओकर अंगरेजी शिक्षित पुत्र शशिशेखरक विषयमे "पितापुत्र" नामक कथा अछि। मुदा वास्तवमे एहि उपन्यासमे शिवशेखरक भूमिका बड्ड छोट अछि। उपन्यासमे ओ प्राचीन भारतक प्रतिनिधित्व करैत एक प्रभावहीन व्यक्तित्वक संग विद्यमान अछि। ओ जाहि तरहेँ अपन पुत्र और बादमे अपन पौत्रसँ संघर्ष करैत अछि ओ	

	आजुक पाठककेँ तर्कसंगत नहि लागत। वस्तुतः प्राचीन सम्प्रदायक ब्राह्मण सभक लेल ताराशंकरक आदर हुनक परम्परावादिता सिद्ध करैत अछि मुदा आजुक पाठकक लेल ओकर कोनहु अर्थ नहि हैत। ताराशंकरक विचार किछु रहल हो "गुणदेवता" और "पंचग्राम" किछु आने प्राप्त करैत अछि, किछु जे कि ब्राह्मणवादक सर्वोपरिता सँ बड्ड बेसी महत्त्वक अछि।	

</body></text>
</Doc>